सम्बन्ध

किसी नयी उगी कोपल की तरह
नये-नये सम्बन्ध उगते हैं, फूलते हैं, फलते हैं
और फिर अचानक सूखे पत्तों की तरह टूट जाते हैं।
किन्तु मेरे और तुम्हारे सम्बन्ध
जो कभी उगे थे, फले फूले थे,
आज सूख कर भी जुड़े हैं;
लेकिन कभी ये टूट जाये तो
तुम शोक मत करना।
तना तो तुम हो तुम्हें नये सम्बन्ध मिलेंगे;
मैं तो सूखे पत्तों की तरह धूल में मिल जाऊंगी।
फिर भी मुझे इन्तजार है एक हवा के झोंके का,
जो मुझे तोड़ कर तुमसे दूर ले जाये;
क्योंकि सूख कर जुड़े रहने की पीड़ा से
टूट कर गिर जाने का दर्द कहीं बहुत कम है।

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE- 247667 (U.P.)

यादें

वक्त ने छीन ली एक आवाज,
एक नाम एक पहचान किसी की
और छीन लिया किसी अपने को अपनों से,
अब तो बस एक अक्स का अहसास है पास।
अक्स जो हर पल बनता व बिगड़ता है,
इन बनती बिगड़ती आकृतियों के बीच,
उभरता है एक चेहरा, कुछ गुमसुम कुछ खोया सा
और दे जाता है एक दिशा मेरी सोच को;
और यह सोच शब्द बन बन कर,
ओस की मानिंद बिखर जाती है पन्नों पर
और शेष रह जाती है चन्द यादें;
फिर नयी सोच की शुरूआत के लिये ।

अन्जू चौधरी, शोध सहायक